# Sufism/Tasawwuf

The terms Sufi, Wali, Darvesh and Faqir are used for Muslim saints who attempted to achieve development of their intuitive faculties through ascetic exercises, contemplation, renunciation and self-denial. By the 12th century A.D., Sufism had become a universal aspect of Islamic social life as its influence extended over almost the entire Muslim community.

Sufism represents the inward or esoteric side of Islam or the mystical dimension of Muslim religion, which is also called 'Tasawwuf'. However, the Sufi saints transcending all religious and communal distinctions, worked for promoting the interest of humanity at large. The Sufis were a class of philosophers remarkable for their religious catholicity. Sufis regarded God as the supreme beauty and believed that

one must admire it, take delight in His thought and concentrate his attention on Him only. They believed that God is 'Mashuq' and Sufis are the 'Ashiqs'.

Sufism crystallized itself into various 'Silsilahs' or orders. The 4 most popular among these were Chistis, Suhrawardis, Qadiriyahs and Naqshbandis.

Chishti Silsila was the first sufi sect to come to India. Its founder in India was Khwaja Muinuddin Chishti. He kept a distance from politics and believed in living a normal life. According to him, others could be helped even without wealth. The main followers of this Sufi sect were Muinuddin Chishti, Baba Farid, Nizamuddin Auliya, Naseeruddin Chirag Delhi, etc

The Suhrawardi silsilah was politically active. It was founded by Sheikh Bahauddin Zakaria in India. This sisilah did not believe in living in poverty. According to them, unless Sufi saints have the resources themselves, how will they be able to help others.

Sufism took roots in both rural and urban areas and exercised a deep social, political and cultural influence on the masses. It rebelled against all forms of religious formalism, orthodoxy, falsehood and hypocrisy and endeavoured to create a new world order in which spiritual bliss was the only and the ultimate goal. At a time when struggle for political power was the prevailing madness, the Sufi saints reminded men of their moral obligations. To a world torn by strife and conflict they tried to bring peace and harmony. The most important contribution of Sufism is that it helped to blunt the edge of Hindu-Muslim

prejudices by forging the feelings of solidarity and brotherhood between these two religious communities.

## सूफ़ीवाद/तसव्वुफ़

सूफी, वली, दरवेश और फ़कीर शब्द का उपयोग मुस्लिम संतों के लिए किया जाता है, जिन्होंने तपस्वी अभ्यास, चिंतन, त्याग और आत्म-अस्वीकार के माध्यम से अपने सहज ज्ञान युक्त संकायों के विकास को प्राप्त करने का प्रयास किया। 12 वीं शताब्दी में सूफीवाद इस्लामी सामाजिक जीवन का एक सार्वभौमिक पहलू बन गया था क्योंकि इसका प्रभाव लगभग पूरे मुस्लिम समुदाय पर बढ़ा था।

सूफीवाद इस्लाम के अंदरूनी या गूढ़ पक्ष या मुस्लिम धर्म के रहस्यमय आयाम, जिसे तसव्वुफ़ भी कहा जाता है, का प्रतिनिधित्व करता है। हालांकि, सूफी संतों ने सभी धार्मिक

और सांप्रदायिक भेदभावों को पार करते हुए बड़े पैमाने पर मानवता के हित को बढ़ावा देने के लिए काम किया। सूफी दार्शनिकों का एक वर्ग था जो उनकी धार्मिक कैथोलिकता के लिए उल्लेखनीय था। सूफियों ने ईश्वर को सर्वोच्च माना और माना कि किसी को भी इसकी प्रशंसा करनी चाहिए, अपने विचार में आनंद लेना चाहिए और अपना ध्यान केवल उसी पर केंद्रित करना चाहिए। वे मानते थे कि ईश्वर 'मशुक 'है और सूफी 'आशिक' हैं।

सूफीवाद ने खुद को विभिन्न 'सिलसिले' में विभाजित कर लिया। इनमें से 4 सबसे लोकप्रिय, चिस्तिया, सुहरावर्दिया, कादिरिया और नक्शबंदिया थे। चिश्ती सिलसिला ने हिंदूस्तान में सर्वप्रथम कदम रखा था। भारत में इसके संस्थापक ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती थे। वे राजनीति से दूरी बनाए रखते थे और सामान्य जीवन जीने में यकीन रखते थे। इनके अनुसार बिना धन दौलत के भी दूसरों की सहायता की जा सकती थी। इस सूफ़ी संप्रदाय के मुख्य अनुयायियों का नाम है, मुइनुद्दीन चिश्ती, बाबा फरीद, निजामुददीन औलिया, नसीरुद्दीन चिराग दिल्ली।

जबकि इसके विपरित सुहरावर्दी सिलसिला राजनैतिक तौर पर सक्रिय था जिसकी हिंदूस्तान में स्थापना शेख

बहाउद्दीन जकारिया ने की थी। ये सिलसिला ग़रीबी में जीने पर यकीन नहीं रखता था। इनके अनुसार जब तक सूफ़ी संतो के पास स्वयं संसाधन नहीं होंगे तब तक वे भला किस प्रकार से दूसरों की सहायता कर सकेंगे।

सूफीवाद ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में जड़ें जमा लीं और जनता पर एक गहरा सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक प्रभाव डाला। इसने धार्मिक औपचारिकता, रूढ़िवाद, झूठ और पाखंड के सभी रूपों के खिलाफ विद्रोह किया और एक नया विश्व व्यवस्था बनाने का प्रयास किया जिसमें आध्यात्मिक आनंद ही एकमात्र और अंतिम लक्ष्य था। ऐसे समय में जब राजनीतिक शक्ति के लिए संघर्ष प्रचलित पागलपन था, सूफी संतों ने पुरुषों को उनके नैतिक दायित्वों की याद दिलाई। संघर्ष और संघर्ष से फटे हुए दुनिया में उन्होंने शांति और सद्भाव लाने की कोशिश की। सूफीवाद का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह है कि इसने इन दो धार्मिक समुदायों के बीच एकजुटता और भाईचारे की भावनाओं को बनाकर हिंदू-मुस्लिम पूर्वाग्रहों के किनारे को कुंद करने में मदद की।